SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 5

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

भाग - 7

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

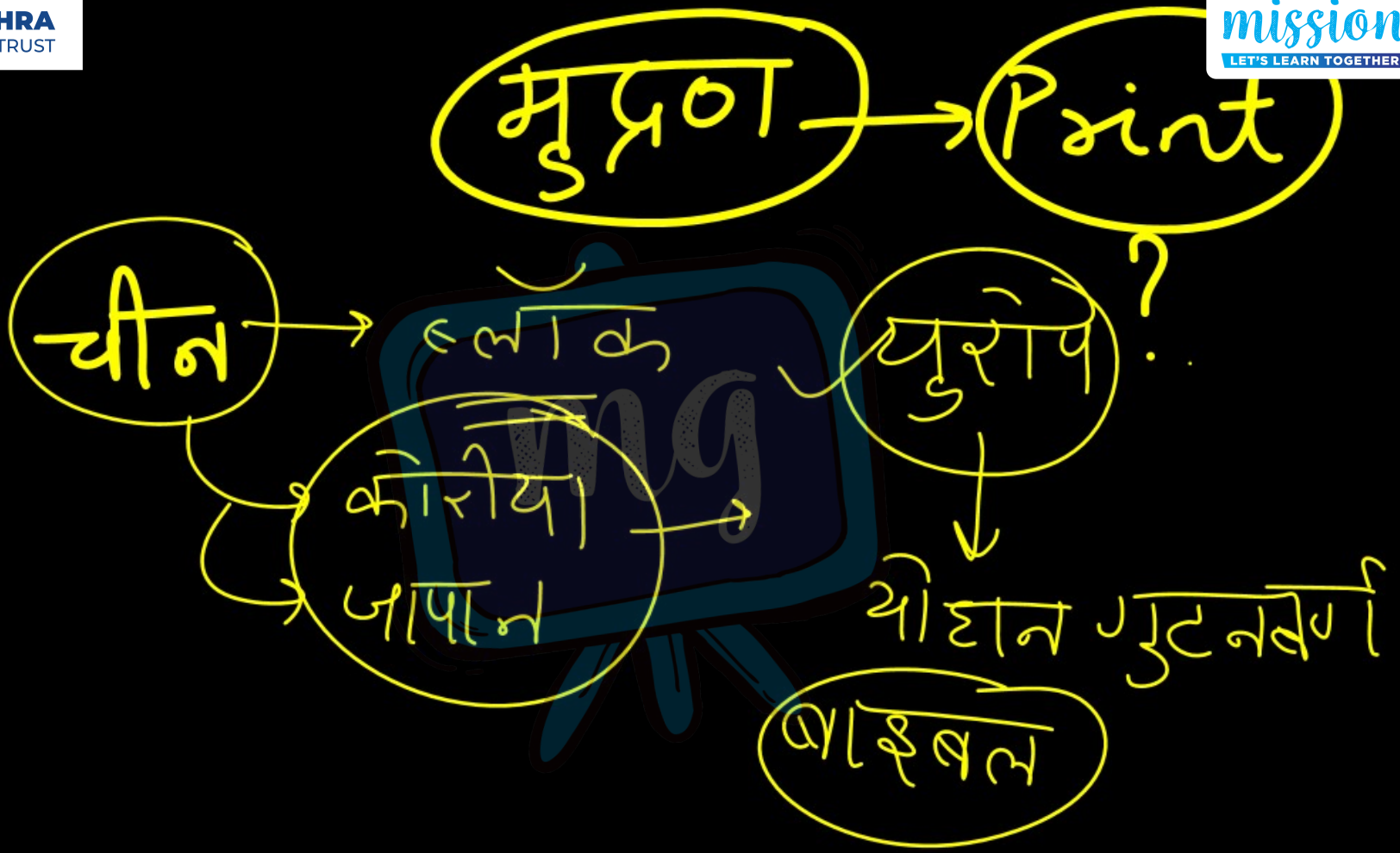

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

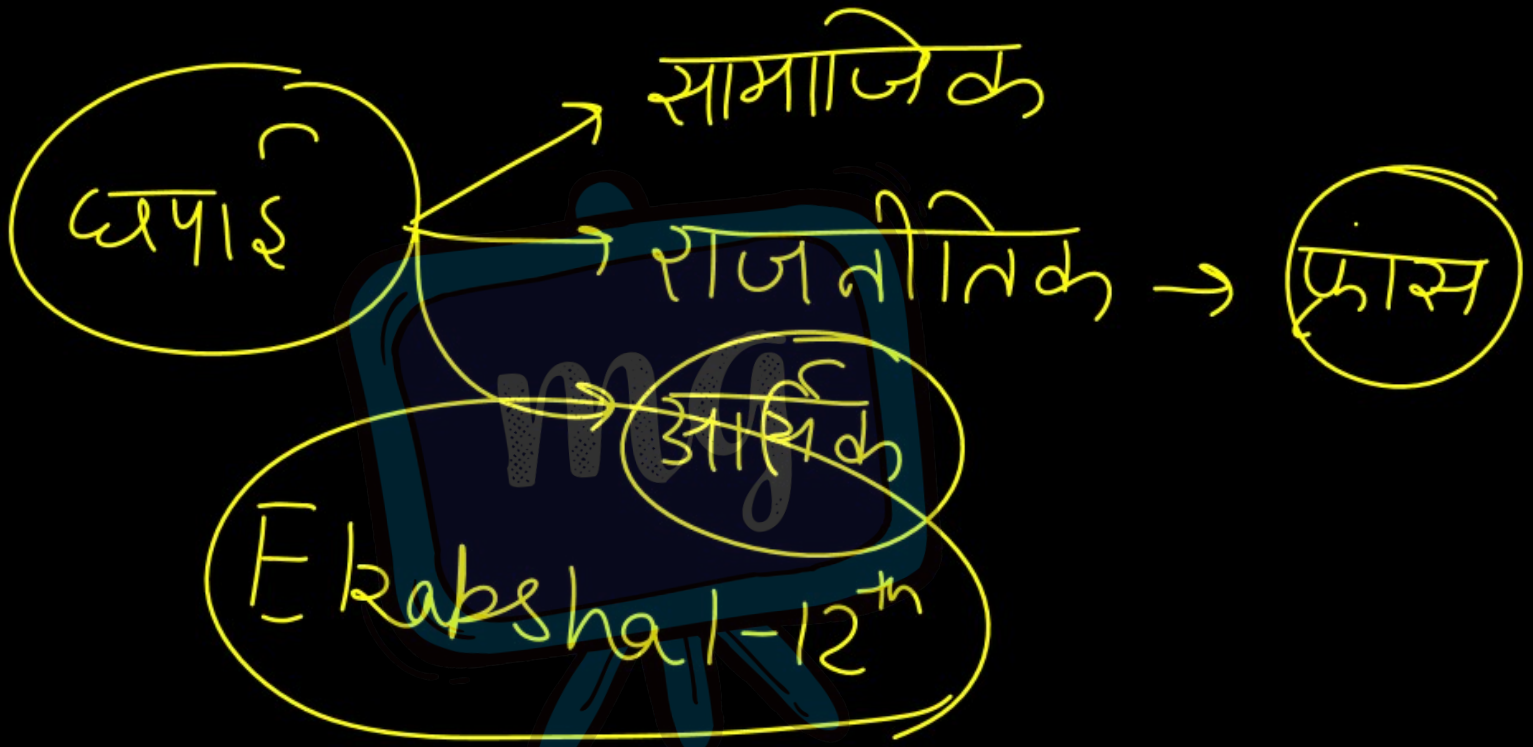

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

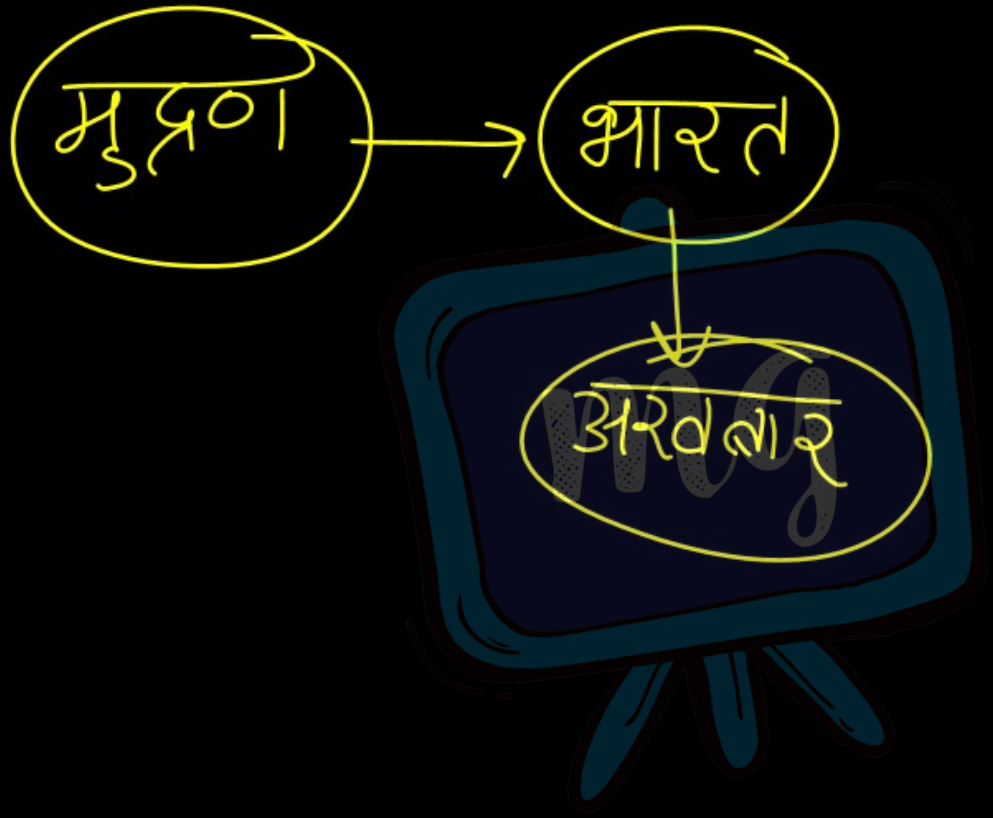

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

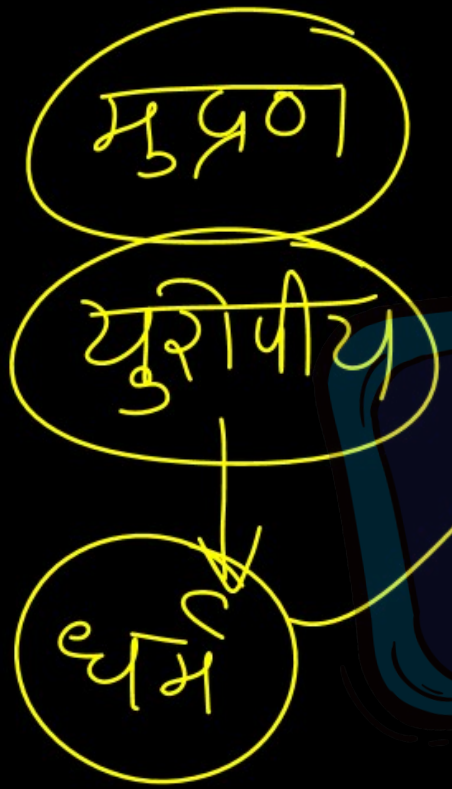

मुस्लिम वर्ग :-

- उत्तर भारत में उलमा, मुस्लिम राजवंशों के पतन को लेकर चिंतित थे।
- उन्हें डर था कि कहीं औपनिवेशिक शासक धर्मांतरण को बढ़ावा न दें, या मुस्लिम कानून न बदल डालें।
- इससे निपटने के लिए उन्होंने सस्ते लिथोग्राफी प्रेस का इस्तेमाल करते हुए धर्मग्रंथों के फारसी या उर्दू अनुवाद छापे।
- उन्होंने धार्मिक अखबार या गुटके निकाले।

- सन् 1867 में स्थापित देवबंद सेमिनरी ने मुसलमानों को रोजमर्रा का जीवन जीने का सलीका और इस्लामी सिद्धांतों के मायने समझाते हुए हजारों फतवे जारी किये।
- पूरी 19वीं सदी के दौरान कई इस्लामी संप्रदाय और सेमिनरी पैदा हुए।
- धर्म को लेकर सबकी अपनी अपनी व्याख्याऐं थीं।
- हर कोई अपना संप्रदाय बढ़ाना चाहता था और दूसरे के असर को काटना चाहता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

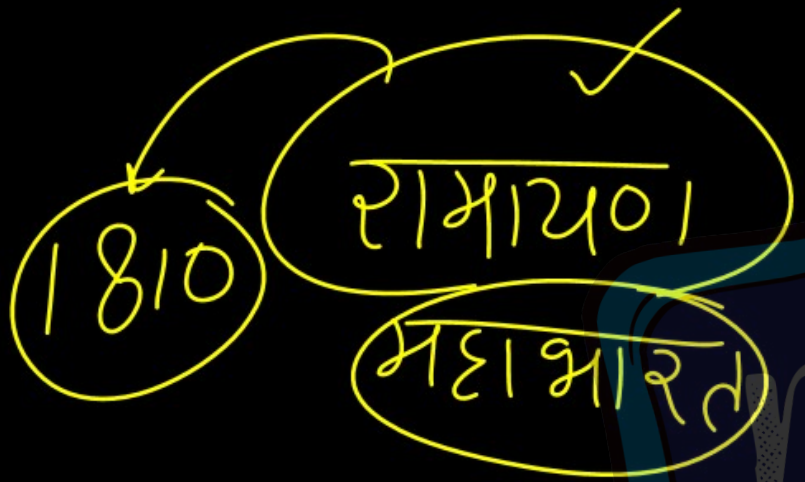

हिन्दु वर्ग :-

- हिंदुओं के बीच भी छपाई से, खास तौर पर स्थानीय भाषाओं में धार्मिक पढ़ाई को काफी बल मिला।
- 16वीं शताब्दी की तुलसीदास की रामचरितमानस का पहला मुद्रित संस्करण 1810 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।
- 19वीं सदी के मध्य तक सस्ते लियोग्राफी संस्करणों से उत्तर भारत का बाजार पट गया।

- नवल किशोर प्रेस लखनऊ तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस –बंबई से अनेक भारतीय भाषाओं में अनगिनत धार्मिक किताबों छपीं।
- मुद्रित और लाने ले जाने में आसान होने के कारण आस्थावान इन्हें कहीं भी किसी समय पढ़ सकते थे।
- इन्हें अनपढ़ लोगों को भी बड़ी भीड़ में बोल चाल कर भी पढ़ कर सुनाया जा सकता था।
- धाार्मिक पुस्तकें बड़ी तादाद में व्यापक जन–समुदाय तक पहुंच रही थीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

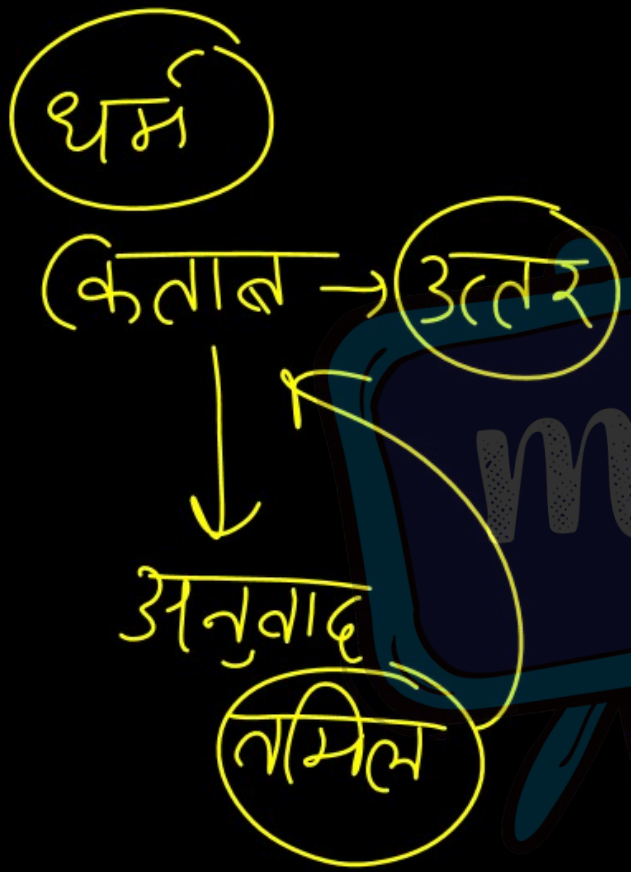

- इससे विभिन्न धर्मों के बीच में तथा उनके अंदर भी वाद-विवाद तथा संवाद की नई स्थिति बन गई थी।
- लेकिन प्रिंट ने समुदाय क बीच सिर्फ मत मतांतर ही पैदा नहीं किये बल्कि इसने समुदायों को अंदर से जोड़ने का काम भी किया।
- इसके द्वारा देश के विभिन्न हिस्से भी आपस में जुड़ने लगे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

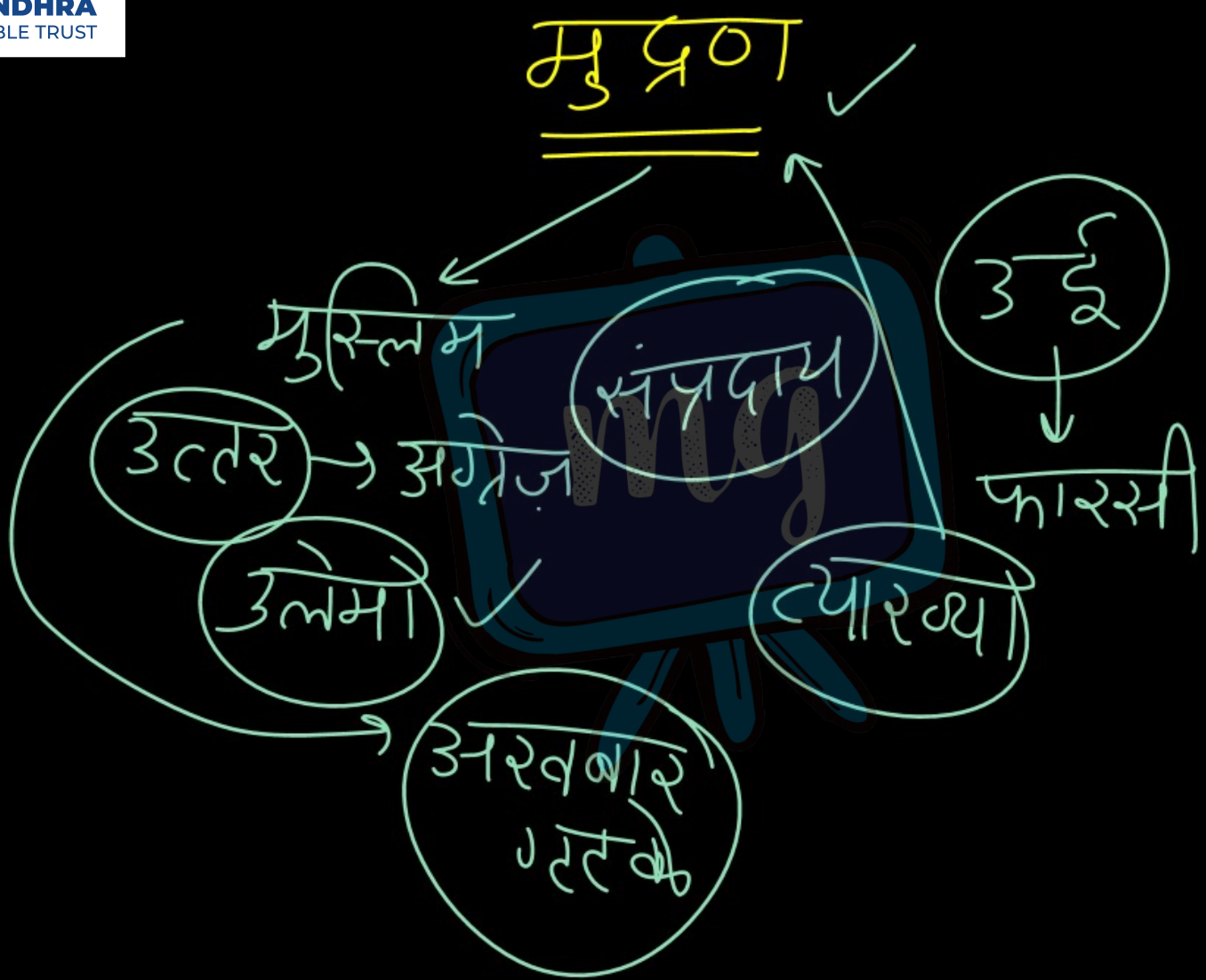

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

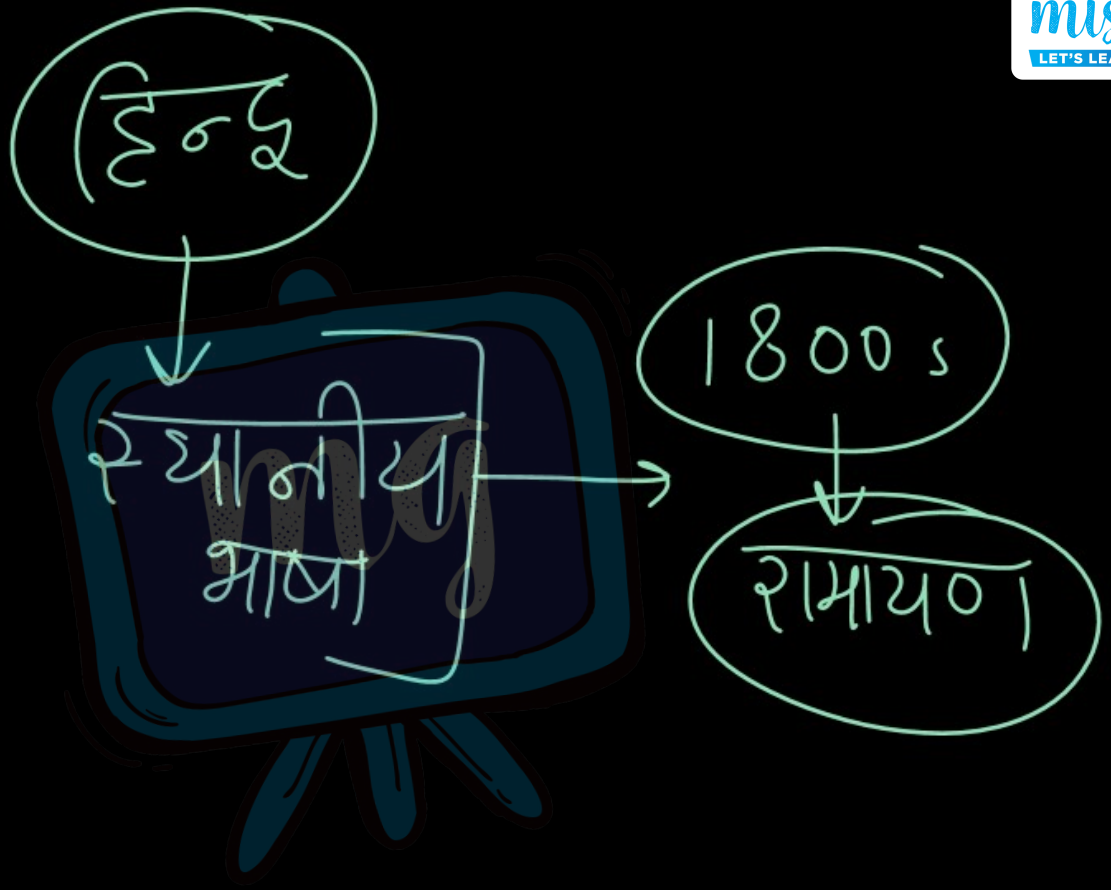

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मुद्रण संस्कृति का हिन्दू वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ा ?



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अखबार क्यों?

(I) (बॉम्बे-टेलीग्राफ एंड कोरियर, 6 जनवरी 1849)

पूजा के कृष्णाजी त्रिम्बक राणाडे मराठी का एक अखबार निकालने चाहते हैं, जिसमें स्थानीय दिलचस्पी की तमाम खबरों को जगह मिल सके।

- इसमें :- (i) सार्वजनिक
  (ii) वैज्ञानिक अन्वेषण
  (iii) प्राक् विद्या
  (iv) सांख्यिकी
  (v) देश के विभिन्न भागों के बारे में खासतौर से दक्कन की जानकारी होगी।
- ऐसे तमाम लोगों से मदद और संरक्षण का निवेदन है जो ज्ञान के प्रसार व जन कल्याण के इच्छुक है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(I) (नेटिव-ओपिनियन - 3 अप्रैल 1870)

- देशी अखबारों और राजनीतिक सभाओं की वही भूमिका होती है जो इंग्लैंड में हाउस ऑफ कॉमन्स में विपक्ष की होती है।
- यानी कि वह सरकारी नीतियों की आलोचनात्मक समीक्षा करें।
- लोगों के हित साधनों में अक्षम हिस्सों को निकाल कर नीतियों में सुधार करें।
- सही नीतियों को तेजी से लागू करें।